॥ ओ३म्॥

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

साप्ताहिक

आर्य सन्देश

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

अनमोल वचन

यत्कामास्ते जुहुमस्तन्नो अस्तु।

हे प्रभु! जिस शुभ इच्छा से हम तेरा आह्वान करें, वह हमारी पूर्ण हो।

वर्ष ३३, अंक ६ एक प्रति : ३ रुपये

सोमवार १६ नवम्बर, २००९ से २२ नवम्बर, २००९ तक

विक्रमी सम्वत् २०६६ दयानन्दाब्द : १८६

सृष्टि सम्वत् १९६०८५३११० वार्षिक : १५० रुपये

फैक्स : २३३४३७३७ ई-मेल : aryasabha@yahoo.com

Website : www.delhisabha.com पृष्ठ सं १ से ८ तक

आर्यसमाज के प्रवर्त्तक महर्षि दयानन्द सरस्वती जी का

१२५वां निर्वाण वर्ष

एक वर्षीय कार्ययोजना का समापन समारोह

सोमवार 30 नवम्बर, 2009 समय - प्रातः 9.30 बजे

स्थान : सिरीफोर्ट सभागार, खेलगांव, अगस्त क्रान्ति मार्ग, नई दिल्ली

मार्गदर्शन

श्रीमती शीला दीक्षित जी, माननीया मुख्यमन्त्री, दिल्ली सरकार

एवं

(अध्यक्षा, महर्षि दयानन्द सरस्वती 125वां निर्वाण वर्ष आयोजन समिति)

वेदोद्धारक, सच्चे ईश्वर भक्त, तर्क व श्रद्धा से युक्त धर्म का सच्चा स्वरूप बताने वाले, राष्ट्रीय स्वाधीनता और समाज सुधार के प्रखर पुरोधा, नारी जाति के उद्धारक तथा मानवता के अनन्य मार्ग दर्शक महर्षि दयानन्द सरस्वती के 125वें निर्वाण वर्ष के अवसर पर आयोजित एक वर्षीय कार्यक्रम के समापन समारोह में सपरिवार व इष्ट मित्रों सहित उत्साहपूर्वक पधारकर महर्षि के उपकारों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापन करते हुए उन्हें भावपूर्ण श्रद्धाञ्जलि देने हेतु इस कार्यक्रम में पधारकर अपना कर्त्तव्य पालन करें तथा कार्यक्रम की शोभा बढ़ाएं। इस अवसर पर महर्षि दयानन्द कॉमिक्स योजना के पुरस्कारों का भी वितरण किया जाएगा।

-: निवेदक :-

महाशय धर्मपाल	रमाकान्त गोस्वामी	ब्र. राजसिंह आर्य	विनय आर्य
उपाध्यक्ष	संयोजक	प्रधान	महामन्त्री

महर्षि दयानन्द सरस्वती 125वां निर्वाण वर्ष आयोजन समिति   दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा (पं.)

महर्षि दयानन्द सरस्वती कॉमिक्स

प्रतियोगिता परिणामों की घोषणा

बुधवार 25 नवम्बर, 09 को दोपहर 2 बजे

स्थानः आर्यसमाज हनुमान रोड, नई दिल्ली-1

सान्निध्य : महाशय धर्मपाल जी

विजेताओं को पुरस्कार दिनांक 30 नवम्बर, 09 को सिरीफोर्ट ऑडिटोरियम में प्रदान किए जाएंगे।

-संयोजक, महर्षि दयानन्द बाल कॉमिक प्रतियोगिता

दर्शन व्याख्या - 20

न्यायदर्शन के अनुसार 'इन्द्रिय'

गतांक से आगे :–

आँख छोटे से छोटे और बड़े से बड़े पदार्थ को देखने की सामर्थ्य रखती है (महदणुग्रहणात– न्याय०3–1–31),उससे चीटीं या राई के दाने भी देख सकते है और हाथी या पहाड़ को भी और या फिर द्युलोक में स्थित सूर्य–चन्द्र–नक्षत्रादि को भी, इसे से उसकी व्यापकता (विभुत्व) और अभौतिकता सिद्ध होती है (पूर्व पक्ष), क्योंकि यदि छोटी–सी पुतली ही आँख होती तो वह इतने विशालकाय पहाड़ या दूरस्थ नक्षत्रादि को देखने में कैसे समर्थ होती? इस शंका का समाधान करते हुए महर्षि गौतम ने लिखा है *'रश्म्यर्थसन्निकर्षविशेषात तदग्रहणम्'* (न्याय० 3–1–32) अर्थात् आँखों की किरणें तेज (प्रकाश) से मिलकर दृश्य वस्तु में व्यापक हो जाती हैं, फलतः छोटे से छोटा पदार्थ प्रत्यक्ष हो जाता है। समझने की बात यह भी है कि चक्षु तेजस इन्द्रिय है, किन्तु इसकी रश्मियाँ (किरणे) अनुद्भूत रूप होने से सूर्य, दीपक, आदि के समान दिखलायी नहीं पड़ती। चक्षुरिन्द्रिय की किरणें सूक्ष्म हैं, अतः उनको प्रत्यक्षतः नहीं देखा जा सकता। दूसरी बात यह भी है कि चक्षु से सूर्य, दीपक, आदि के बाह्य प्रकाश की सहायता से ही देखा जा सकता है, अंधकार में नहीं। चूँकि बिना प्रकाश के चक्षु काम नहीं करता, इससे यह सिद्ध होता है कि चक्षु तैजस है, क्योंकि प्रकाश तेज का धर्म है।

आँख या अन्य इन्द्रियाँ अभौतिक नहीं, भौतिक ही है, इसके लिए अनेक तर्क दिये जा सकते हैं। यदि किसी वस्तु को आँख की पुतली के एकदम निकट लाया जाये तो भी वह दिखायी नही देगी, क्योंकि आँख और वस्तु के बीच में कुछ दूरी आवश्यक है। आँख और वस्तु के बीच में आवरण, व्यवधान या रुकावट के आने पर भी वह वस्तु दिखायी नहीं देगी, क्योंकि आवरण, व्यवधान या रूकावट भौतिक पदार्थों का गुण धर्म है । इससे यह सिद्ध है कि आँख भौतिक है, अभौतिक नहीं है प्रश्न किया जा सकता है कि कांच या स्वच्छ जल के आवरणके बावजूद चक्षु उनके आर–पार देख लेते है, अतः चक्षु को अभौतिक मानना चाहिए, तो इसके उत्तर में सूत्रकार का स्पष्ट कथन है कि कांच, जल आदि के स्वच्छ स्वभाव के कारण चक्षु की सूक्ष्म रश्मियों को अवरोध की बाधा उत्पन्न नहीं होती, जबकि मलिन स्वभाव की दीवार, काष्ठादि से यह बाधा उत्पन्न होती है (देखिए न्याय०3–1–46– 49)

– डॉ. सुन्दर लाल कथूरिया (डी.लिट्),
बी–3/79, जनकपुरी, न.दिल्ली–110058 क्रमशः

The Sixteen Rituals of Aaryas

Continued from Last Issue.

The true tale of this life lies in the casting of impressions upon the soul - whether good or bad - in each birth it takes. As a part of this culture, the purpose of human life is to purify and clean the soul through good impressions and to keep refining it. The question is: How to wipe out the existing impurities and how to colour the soul anew? This is possible through the activities of the present life. The soul can be worked upon as a result of being enclosed in the body. To clean a utensil, you hold it in your hand. To clean the soul, it has to be held within the body. Bound to the human body, it can be dyed with new impressions. The moment the soul enters the human body, the Vedic culture starts influencing it with supreme impressions and continues doing so until the soul once again, leaves body behind.

Whenever the soul enters the body, the practice of Vedic Culture ensures that a fencing of rituals is built around it which prevents any negative impressions from impinging on the soul. It is inevitable to escape impressions. If there is no carefully arranged practice, there will be scope for bad impressions instead of good ones, and instead of development, degradation of the human being will ensue. If, on the other hand, there is a carefully arranged plan, it will bring about a regularization of impressions, a controlled system of encouraging good impressions and avoiding bad ones and a continuous process of development of man, in which he uplifts himself as well as the society. According to Vedic thought, this birth, the previous ones and the ones to come are all an attempt towards soul-purification through casting of impressions - a process of cleansing the soul free of its impurity with the help of constant application of rituals.

The process of complete and wholesome transformation of an individual by means of Vedic Culture encompassed not a handful but sixteen rituals. Their names, in sequence, are as follows:

1. Garbhaadhaan sanskaar (The ritual of conception)
2. Punsavan sanskaar (The ritual performed for the physical health of the fetus)
3. Seemantonnayan sanskaar (The ritual performed for the mental development of the fetus)
4. Jaatakarm sanskaar (The ritual performed at the time of birth)

To be continued....

गतांक से आगे :–

देववाणी : संस्कृत

संस्कृतविकासे बाधानां परिहाराणाञ्च चिन्तनम्

दौर्भाग्यमेतदस्माकं यत् सस्कृतभाषायाः पठनस्य अवसरः अस्माभिः प्राप्तव्यः एतत् न्यायाधीशैः न केवलं निर्दिष्टं अपितु आदिष्टम् अपि पुनरपि चक्षुः नोन्मीलितम्।

उच्चतमन्यायालयस्य न्यायाधीशैः संस्कृतस्य संरक्षणमधिकृत्य निर्णयो दीयेत इत्येषा दुर्दशा अकस्माकं देशस्य संस्कृतज्ञानां संस्कृतानुरागिणाञ्च। अनेन एतत् सिद्श्यति न तु संस्कृतभाषा मृता अपितु वयमेव प्राणहीनाः सञ्जाताः। अस्मासु जीवितेषु सत्यु अस्याः भाषायाः आवश्यकता सर्वोच्चन्यायालयेन प्रमाणीक्रियते। संस्कृतेन महिमान्विताः मण्डनीभूताः जनाा तेषां चरित्रमेव प्रदर्शयति यत् कापि भाषा न स्वयमेव प्रतिष्ठापदं याति अपितु यदासचेतसः सहृदयाः मानवा। तस्याः भाषायाः प्रयोगं विषयीकृत्य आत्मानं प्रस्तुवन्ति सदैव सा भाषाऽपि गौरवायते। या भाषा अस्माकं पूर्वजैः अस्मभ्यं दायरूपेण दत्ता तस्या अध्ययनेन, ज्ञानेन, रक्षणेन च निष्कृतः भवितुमर्हति।

अद्यत्वे जनाः संस्कृतभाषायाः भूरि–भूरि प्रशंसां तु विदधति,परञ्च प्रवृत्ताः न भवन्ति अपितुं, पाठयितं स्वसनतिमञ्च। कश्चित् भवत्यपि प्रवृत्तः यत् अस्माभिः किं कथञ्च करणीयम्?

मम विचारे तु अस्माभिः सर्वेषु विद्यालयेषु नवम दशम कक्षासु संस्कृताध्ययनस्य अनिवार्यरूपेण व्यवस्थां कारयितुं महान् प्रयत्नः विधातव्यः। अनेन बहुषु महाविद्यालयेषु संस्कृतछात्राणां संस्कृतछात्रां नितान्ताभावः यद् अवलोक्यते तत् दूरीकर्त्तुं शक्यते (विद्यालयेषु च संस्कृतमधीयानाः छात्राः संस्कृतं पठितुं शक्नुवन्ति)। अनेन संस्कृताध येतारः वर्धिष्यन्ते संस्कृतिं च रक्षिष्यन्ति।

अहन्तु एवं तर्कयामि यथा आधुनिकतविद्यालयेषु आप्रथम–श्रेणीतः द्वादशश्रेणीपर्यन्तं आंग्लभाषायाः प्रभावों विलोक्यते तथैव संस्कृतभाषायाः कृते प्रथमश्रेणीतः द्वादशश्रेणीपर्यन्तं पाठयितुं पठितुञ्च व्यवस्था भवेतृ तर्हि किमिच्छामात्रेण किमपि भवितुमर्हति? इच्छापित आवश्यकी वर्त्तते परन्तु तस्या अच्छायाः पूर्त्यर्थं इतोऽप्यग्रे कारणीयं भवति। मम दृष्टौ तु अल्पीयान् विद्यालयान् अपवादरूपेणोझित्वा नास्ति विद्यालयेषु एकादशद्वादशश्रेण्योः संस्कृताध्ययनस्यावसरः छात्राणां कृते।

महदाश्चर्यस्य विषयोऽयं यत् बहवः छात्रा एव न, शिक्षकाः प्राचार्यपदमलंकुर्वाणाः विशिष्टाः पुरुषा अपि नावबोधयन्ति यत् आंग्लभाषा नानिवार्या, एकादश–द्वादशकक्षयोः नापरिहार्या, तर्हि कथं ते स्व–स्व विद्यालयेषु संस्कृताध्ययनस्य व्यवस्थां कर्त्तुं न पारयन्ति। यदि कोऽपि छात्रः पठितुम् अभिलषति तर्हि व्यवस्थायाः अभावेन विवशतया न सः पठितुं प्रवर्त्तते।

– डॉ. जितेन्द्र कुमारः, प्राध्यापक, अजमेरस्थ दयानन्द महाविद्यालयीयः,
अजमेर (राजस्थान) क्रमशः

बोध कथा

जब अन्तःकरण शुद्ध हुआ

– महात्मा आनन्द स्वामी सरस्वती

मथुरा में बाल ब्रह्मचारी तेज से भरपूर स्वामी दयानन्द पाखण्ड के दुर्गों को गिराये जाते थे। प्रतिदिन शास्त्रार्थ होते थे। प्रतिदिन उनके विरोधी हारते थे। दांत पीसते थे कि यह साधु कल मथुरा में ही पढ़कर गया था, आज हमारी ही पोल खेले देता है। हमारी आजीविका छीन लेता है। शास्त्रार्थ में हमसे हारता नहीं। इसे हराने के लिए कोई ओर उपाय करना चाहिए। उपाय सोचा गया। एक वेश्या के पास गए वे लोग। सुन्दर थी वह। उससे बोले – 'हम तुझे बहुत–से आभूषण देंगे। अमुक उद्यान में दयानन्द रहता है। तू उसके पास जा। उसके पास जाकर कोलाहल मचा देना कि इसने मुझे छेड़ा है। हम निकट ही छिपे रहेंगे। बाहर निकलकर डण्डे से उसे अधमरा कर देंगे। उसे मथुरा से निकाल देंगे। बाहर निकल जाने पर तुम्हें और रुपया देंगे।'

वेश्या ने वह बात मान ली। अपने–आपको खूब सजाकर, कितने ही आभूषण धारण करके वहां गई, जहां ब्रह्मचर्य और आत्मा के तेज से चमकते हुए स्वामी दयानन्द बैठे थे – एक वृक्ष के नीचे आंखें मूंदकर, ध्यान में मग्न। वेश्या ने उनको दूर से देखा तो ऐसा प्रतीत हुआ जैसे आधे पाप धुल गए हैं। निकट गई तो शेष आधे भी धुल गए, और निकट जाने पर अन्तःकरण भी पवित्र हो गया। एक चीख उसके मुख से निकल गई। ब्रह्मचारी ने आंखें खोल दी, बोले – मां! तुम कौन हो?

मां का शब्द सुनते ही उनका हृदय भर गया। आंखें डबडबा आईं। अश्रुभरी आखों से उसकी ओर देखकर अपने आभूषण उतारने लगी।

महर्षि ने फिर कहा – 'मां! तुम कौन हो? अपने बेटे से क्या लेने आई हो तुम?'

स्त्री ने सिसकते हुए कहा – 'क्षमा मांगने आई हूं महात्मा! इन आभूषणों ने मुझे अंधा कर दिया था। इनकी मुझे आवश्यकता नहीं।' और रोते हुए उसने सारी कहानी महर्षि को सुना दी। महर्षि ने गम्भीरता से कहा – मां, ईश्वर ने जो श्रेष्ठ बुद्धि इस समय दी है, वह सदा बनी रहे, यही मेरा आशीर्वाद है।'

इस स्त्री के पाप भरे मन को बदला तो किस वस्तु ने? महर्षि की पवित्र आत्मा की शक्ति ने। आत्मा की शक्ति जिनके अन्दर जाग उठती है, उनके समक्ष एटमबमों और हाईड्रोजन बनों की शक्ति भी हार जाती है।

माता शत्रुः पिता वैरी, गुरु = ?

स्वामी दयानन्द सरस्वती जी ने सत्यार्थ प्रकाश के द्वितीय समुल्लास के अन्त में निम्न श्लोक उदघृत किया है। मैं वर्तमान समय में इसकी प्रासंगिकता प्रस्तुत कर रहा हूं–

माता शत्रुः पिता वैरी, येन बालों न पाठितः। न शोभन्ते सभा मध्ये, हंस मध्ये वको यथा।।

– चाणक्य नीति 2

यह आचार्य चाणक्य का वचन है, उन्होंने बताया है कि वे माता और पिता अपनी संन्तान के पूर्ण दुश्मन हैं जो अपनी सन्तान को शिक्षा न दिलाते और न देते हैं। उनकी सन्ताने सभा में वैसे ही शोभा नहीं पाती जैसे हंसों की सभा में बगुले शोभायमान नहीं होते हैं।

इस श्लोक को पढ़कर समझने से इतना तो स्पष्ट हो जाता है कि आचार्य चाणक्य में इतना अधिक आत्मिक बल है कि यदि माता पिता भी अपनी सन्तानों के साथ स्वकर्तत्य का पालन नहीं करते तो वे उन्हें खरी खोटी सुनाकर, और उनके कर्तव्यों की याद दिलाकर अपने धर्म का पालन करते हैं। कुछ लोग केवल जन्म देकर ही स्वयं को पूर्ण माता पिता मान बैठते हैं, लेकिन ऐसा मानना उचित नहीं है क्योंकि शिक्षा की प्राप्ति के बिना मनुष्य और पशु में कोई अन्तर नहीं रह जाता। योग्यता ही मनुष्य और पशु में अन्तर का मुख्य आधार है।

वैदिक वाङ.मय के प्राचीनतम् ग्रन्थ चार वेद हैं।

1. ऋग्यवेद (कुल 10552 मन्त्र)
2. यजुर्वेद (कुल 1975 मन्त्र)
3. सामवेद (कुल 1875 मन्त्र)
4. अथर्ववेद (कुल 5977)।

इन्हीं चारों वेदों की 1127 शाखाएं हैं। प्रत्येक वेद का एक एक ब्रह्मय ग्रन्थ होता है, इनमें से यजुर्वेद के ब्रह्मण ग्रन्थ का नाम शतपथ ब्रह्मण है। शतपथ ब्रह्मण में लिखा है कि –

"मातृमान् पितृमान आचार्यवान् पुरूषो वेद।"

अर्थात वह मनुष्य भाग्यशाली है जिसका जन्म धार्मिक विद्वान माता पिता और आचार्य के निकट हो। इसीलिए माता पिता और आचार्य ये तीनों पूजा के सुयोग्य पात्र हैं। यहाँ पूजा शब्द का अर्थ समझ लेना भी आवश्यक है। पूजा शब्द पूजधातु से निष्पन्न है जिसका अर्थ होता है सम्मान करना, आदर करना। साधारण बुद्धि के लोग सामान्यतया 'पूजा' का अर्थ आरती या धूप दीप ही समझते हैं, जो कि भूल एवं पोल है। इन तीनों माता पिता और आचार्य को ईश्वर के बाद दुनिया की सबसे बड़ी महाशक्तियां है, इसीलिये सर्वपूजित हैं। अब हम इस लेख के माध्यम से इन तीनों महाशक्तियों पर विचार करेंगे।

मित्रों माता पिता और गुरु में से आचार्य चाणक्य बड़ी सजगता के साथ उन माता और पिता को शत्रु की संज्ञा दे रहे हैं जो अपनी संतानों को पढ़ाते नहीं हैं। अब आप विचार करें कि यदि कोई गुरु अपने शिष्य को न पढ़ाता तो आचार्य चाणक्य उस गुरू को क्या संज्ञा देते? तथा आप उसे क्या कहते? आप तो सोच रहे होगें कि जब आचार्य चाणक्य ने ही कुछ नहीं कहा तो हम क्या कहें? और क्यों कहें? लेकिन मित्रों! जब भी किसी बात पर चर्चा होती है तो तीन बातों को अवश्य ही ध्यान में रखा जाता है। देश (स्थान), काल(समय), और परिस्थिति। जिस मनुष्य को इन तीनों का सम्यक् बोध नहीं, वह कभी भी निष्पक्ष चर्चा नहीं कर सकता है।

अतः मित्रों जब आचार्य चाणक्य माता पिता को शत्रु कह रहे थे उस समय स्थान तो यही भारत भूमि (आर्यावर्त) ही था, बदले हैं तो केवल समय और परिस्थितियाँ। उस समय गुरु के बारे में शंका की कोई जगह ही नहीं थी। उस समय शिक्षक अपने शिष्य को गर्भ में पल रहे शिशु की तरह संभालता था, पुत्रवत् समझता था। गुरू को कोई परेशानी भी होती थी तो भी अपने शिष्यों के शारीरिक एवं मानसिक विकास के लि वह पूर्ण सतर्क रहता थाा, तभी सारे विश्व के लोग आर्यावर्त में पढने के लिए आया करते थे। तक्षशिला विश्वविद्यालय और नालन्दा विश्वविद्यालय इसके प्रमाण थे।

मित्रो! जब सब कुछ अच्छा ही अच्छा हो, सम्पन्नता ही सम्पन्नता हो तो एक ऐसी बुराई जन्म लेती है, जो महाघातक होती है, वह है अभिमान। बस अभिमान पैदा हो गया गुरू में, जो गुरुत्व के विनाश का कारण बना। आज गुरु पर चारों ओर से प्रश्न उठ रहे हैं। कुछ वर्ष पूर्व यूनेस्को ने विकासशील देशों में शिक्षा की स्थिति पर जानी अपनी ग्लोबल मॉनीटरिंग रिपोर्ट में भारत पाकिस्तान नाइजीरिया और इथोपिया के कुछ शिक्षकों के विषय में प्रश्न चिह्न लगाया है। (साभार, नई दिल्ली, जागरण व्यूरो 9नवंबर 2006) अतः यह स्पष्ट है कि अब गुरु पर चारों ओर से हमले हो रहे हैं। ऐसी स्थिति में हमें सोच समझकर व्यवहार करने की महती आवश्यकता है।

महाभारत में विदुर प्रजागर पर्व, अध्याय 4, श्लोक 7 में लिखा है कि किसी को अभिमान करना योग्य नहीं, क्योंकि 'अभिमान श्रियं हन्ति' अर्थात् अहंकार सब शोभा और लक्ष्मी का नाश कर देता है। इसलिए किसी को भी अभिमान करना उचित नहीं है।

आज भी पूरे देश में ऐसे माता पिता हैं जो अपने बच्चों को विद्यालय नहीं भेजते तथा जो भेजते है उनमें ऐसे अनेक माता पिता हैं जिन्हें विद्यालय और कक्षा तो मालूम हैं लेकिन वे अपने बच्चे का सैक्शन (विभाग) नहीं जानते।

अतः आज पुत्र पुत्री, शिष्य शिष्या, माता पिता और गुरु यदि अपने गौरवमयी स्थान को पुनः प्राप्त करना चाहते हैं तो उन्हें विद्या विरोधी निम्नलिखित 7 (सात) दोषों को छोड़ना ही पड़ेगाः–

1. आलस्य
2. अभिमान
3. मद्यपान
4. मूढ़ता
5. चपलता
6. व्यर्थ इधर उधर की बातें करना।
7. कभी पढ़ना, कभी न पढ़ना

इन विरोधी दोषों के त्यागने से सबको सुख मिलेगा। वास्तव में माता पिता और शिक्षक ही किसी विद्यार्थी के मन को अच्छे संकल्पों से युक्त कर साकते हैं। और मनुष्य को अच्छे मन वाला होना अति आवश्यक है क्योंकि कोई मनुष्य दुनिया का बहुत बड़ा वैज्ञानिक हो लेकिन मन के स्तर पर वह बहुत घटिया हो तो सारी दुनिया को तबाह कर सकता है। एक बड़े कॉलेज का प्रधानाचार्य भी यदि अच्छे मन वाला नहीं हैं तो हजार डिग्रियाँ होने पर भी कॉलेज के दामन को दाग लगा सकता है।

अतः मनुष्य को इसके लिए माता–पिता और आचार्य का प्यार मिलना हर विद्यार्थी को आवश्यक ही नहीं बल्कि अनिवार्य है। अन्त में इस आशा और विश्वास के साथ कि हम सब इस लेख से प्रेरणा लेंगे, अध्यापक होने के नाते मैं ईश्वर से यही कामना करता हूँ कि सब सुखी रहें और विद्याभिलाषी सदा बने रहें।

– पं यशपाल शास्त्री, धर्माचार्य, आर्य समाज प्रीत विहार, दिल्ली

ब्रह्म–सूत्र

द्वितीय अध्याय-तृतीय पाद (7)

यावद्विकारं तु विभागो लोकवत् ।। ७ ।।

अर्थ – (यावद् विकारं) जितने भी विकार हैं (तु) तथा (विभागः) विभाग (भेद) हैं (लोकवत्) वे लोक् के समान हैं।

भावार्थ – सूत्र (२/३/३) के आधार पर आकाश की उत्पत्ति के संबंध में कथन को 'असंभव' हेतु के कारण गौण बताया था। परन्तु आकाश की उत्पत्ति में 'असंभव' की आशंका नहीं होनी चाहिए क्योंकि जितने भी विकास है उनका विश्लेषण करके उनके कारणों का पता लगाया जा सकता है। लोक में स्थूल पदाथो॔ के भेद दिखाई देते हैं, जैसे – यह कपड़ा है, वह घड़ा है, यह कलम है आदि। इस प्रकार जितने भी विकास (कार्य) हैं उन सबका एक दूसरे से भेद (विभाग) शास्त्रों द्वारा किया गया है। इस विभाग के अनुसार ही पाँच महाभूतों की उत्पत्ति का शास्त्रों में उल्लेख है। ये पाँचों महाभूत प्रकृति के विकार हैं और ब्रह्म द्वारा उत्पन्न किए गए हैं। अर्थात् अन्य महाभूतों की तरह आकाश भी प्रकृति का एक विकार है।

कुछ लोग प्रश्न करते हैं कि क्या आकाश भी ऐसा विकार (कार्य) है या नहीं? सूत्रकार आकाश को ऐसा ही विकार मानते हैं क्योंकि विश्लेषण के द्वारा उसके कारणों का पता चल सकता है।

इस विषय में प्रश्न हो सकता है कि आकाश कैसा तत्त्व है? वास्तव में लोक व्यवहार में इस विषय में कुछ भ्रांति है। शास्त्रों में ऊपर जो नीलान्सा या खाली स्थान है उसे आकाश समझना भ्रांति है। शास्त्रों में 'आकाश' 'शब्द' का आश्रय है और वह सारे स्थूल, सूक्ष्म पदार्थों की सक्रियता को स्थान (अवकाश) देने वाला तत्त्व है। विभिन्न विवेचनों से यह पता चलता है कि 'आकाश' कोई नित्य तत्त्व न होकर एक विकार हो सकता है। कपिल के सांख्य दर्शन में विभिन्न कारण तत्त्वों के कुछ 'तन्मात्र' कहे है। आकाश को उत्पन्न होने वाला मानने पर 'चेतन ब्रह्म संपूर्ण संसार का स्रष्टा है' इस प्रतिज्ञा में कोई हानि नहीं होती। बृहदारण्यक उपनिषद् (२/३/३) में आकाश को जो अमृत कहा है वह केवल उसके एकरूप चिरस्थायित्व की ओर संकेत करता है। आकाश के साथ वायु को भी अमृत कहा है, यहाँ 'अमृत' शब्द के मुख्य अर्थ की कल्पना नहीं की जा सकती। उसी के समान आकाश को भी समझना चाहिए।

– शिष्य पूछता है कि आकाश के साथ 'वायु' को भी अमृत कहा गया है। उसके विषय में आपका क्या विचार है? समत्रकार अगले सूत्र में इसका समाधार करते हैं।

– डॉ. भारत भूषण 'विद्यालंकार' सी–2ए/90 जनकपुरी, नई दिल्ली–58

'माँ' कहीं खो न जाए

माँ ममता की मूर्ति है, वात्सल्य का खजाना है, उसमें सब को अपने में समाहित करने की शक्ति है, वह वसुन्धरा है, गृहस्थ जीवन को सुखी बनाने की कुँजी है, स्वर्ग का द्वार है।

माँ मानव शरीर रूपी अग्नि को प्रगट करने वाली अरणी है। माँ गृहों में जीवन चिराग को जलाने वाली जीती–जागती शक्ति है। वह राष्ट्र का अधार है, राष्ट्र की निर्मात्री है। सर्वोत्तम शासक, चरित्रवान नागरिक, वीर सैनिक, सुघड़ गृहिणी उसी के आँचल में पल कर तैयार होते हैं। इसीलिए महर्षि दयानन्द ने नारी के लिए शिक्षा तथा वेदों को पढ़ना, पढ़ाना अनिवार्य बताया।

माँ के बिना घर श्मशान है, तभी लिखा है–**यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते, रमन्ते तत्र देवता:।**

यक्ष ने युधिष्ठिर से पूछा विश्व में सबसे भारी वस्तु क्या है? युधिष्ठिर का उत्तर था ''माँ''। यदि एक पलड़े में माँ रखें दूसरे में विश्व की सुख–सुविधाओं को तो माँ का पलड़ा भारी होगा।

माँ की ममता कोई ठोस वस्तु नहीं है, यह एक एहसास है, ईश्वर की ओर से प्राणीमात्र को दिया गया एक तोहफा है, जो हर मादा प्राणी के हृदय में गंगा की अविरल धारा की तरह स्वाभाविक रूप से प्रवाहित होता है। वेदों में लिखा है– अगर प्यार करना हो तो ऐसे करो जैसे गाय अपने बछड़े से करती है, बन्दरी अपने मरे हुए बच्चे को भी छाती से लगाए रखती है। इसीलिए यह सत्य कहा है माँ, माँ होती है वह जहाँ भी हो बच्चे में उसकी जान होती है।

महात्मा आनन्द अभिलाषी जी ने बड़े सुन्दर शब्दों में माँ की व्याख्या की है। नारी के तीन रूप हैं; बेटी, पत्नी तथा बहिन = माँ।

बाल्यावस्था में जब वह होती है गुड्डे–गुड़ियों का ब्याह रचाती है तो उसमें मातृत्व भाव छिपा रहता है जब वह बड़ी होती है तो उसका ब्याह कर दिया जाता है अगर उसे ससुराल में स्नेह तथा सुख मिलता है तो वह मायके को भूल पूर्णतया समर्पित हो जाती है।

पति–पत्नी के साथ वह माँ बनना पसन्द करती है। माँ बने बिना उसे अपने अधूरेपन का अहसास होता रहता है जिसे वह जल्दी से जल्दी भरना चाहती है। प्रसूति के बाद अपनी प्रसव पीड़ा को भूलकर अपने नवजात शिशु की एक झलक पाने को बेताब हो जाती है और वात्सल्य के साथ दूध की अविरल धारा बहने लगती है। कितना वेग होता है मातृत्व की भावनाओं में! हो भी क्यों, न यह उस की नौ महीनों की तपस्या का फल होता है। जिसे वह हर कष्ट सहनकर सुरक्षित रखती है।

माँ स्वयं गीले में रहकर बच्चे को सूखे में सुलाती है। सूखा स्थान न मिले तो बच्चे को अपनी छाती पर लिटाकर सारी रात बिता देती है। क्या ऐसी माँ का ऋण कोई चुका सकता है? बच्चे की तोतली भाषा को केवल माँ ही लोरियों के माध्यम से ही चन्दा मामा तक की सैर करा देती है। सावन के महीने में हर घर में, वृक्ष की डाल पर रस्सी के झूले (पीधें) पड़ जाते हैं लोकगीत गाकर बच्चों को विशेषकर लड़कियों को संगीत विद्या में निपुण बनाती तथा प्रकृति के आनन्द का एहसास कराती है। लोरियों के माध्यम से विशेष राजपूत माताएँ राष्ट्र व धर्म पर प्राण न्यौछावर करने वालों की वीर गाथाएँ गाकर वीर सन्तानों को देश को अर्पित करती हैं। यही कारण है हजारों वर्षों की गुलामी तथा मैकाले के लाख प्रयासों के बाजवूद भी हमारी महान् संस्कृति आज भी सुरक्षित है विशेषकर गाँवों में।

'माता निर्माता भवति'– मनुष्य के जीवन निर्माण में माता का महत्त्वपूर्ण योगदान है। कुम्हार की तरह बच्चे को जो रूप देना चाहे, उसे देती है! माँ मदालसा इसका सर्वोत्तम उदाहरण है उसने अपने तीन पुत्रों को त्याग तथा चौथे पुत्र को राजा के विशेष अनुरोध पर राज–धर्म में निपुण कर राज्य का योग्य उत्ताराधिकारी बनाया। माता कौशल्या ने अपने तप द्वारा राम जैसा आदर्श मर्यादा पुरुषोत्तम पुत्र पैदा किया। वेद की नारी आदर्श माता है, आदर्श गृहणी है, देवी है, विदूषी है, प्रकाश पूर्ण है। वीरों की जननी है, न्यायाधीश है। राज्य की शासिका है, भूगर्भविद्यावित् ज्योतिर्विद् तथा चिकित्सिका है,

नारी के इस स्वरूप से प्रेरित होकर महादेवी वर्मा जैसी महान् कवियित्री का कहना है–''महिला जीवन की त्रासदी भोगते हुए भी मैं अगले जन्म में महिला होना ही पसन्द करूँगी। नारी जीवन पुरुष से बहुत ऊँचा है। वह एक माँ का त्याग देने वाला जीवन है।''

युग बदला समय बदला, राज्यों के उत्थान व पतन हुए है, देश गुलाम हुआ पुन: आजाद हुआ हर काल में नारी की अपनी दास्तां रही। घोर जुल्म व अत्याचारों का शिकार बनी अनेकों यातनाएँ सहीं। कभी भ्रूण हत्या तो कभी बाल–विवाह तो कभी अनमेल विवाह आजीवन विधवापन की पीड़ा या जीते जी सती होना। वेश्यावृत्ति या देवदासी या भेड़ बकरियों की तरह उनका व्यापार, क्या–क्या नहीं सहा?

मैथिलीशरण गुप्त जैसे कवि भी नारी की दुर्दशा देखकर लिख बैठे–

हाय नारी तेरी यही कहानी।
आँचल में दूध आँखों में पानी।।

इन जुल्मों की प्रतिक्रिया है या भौतिक युग का वरदान। नारी जीवन ने अंगड़ाई ली "हम किसी से कम नहीं" का नारा बुलन्द करती हुई नवजीवन में कूद पड़ी। संयुक्त परिवार को तिलाजलि दे एकल परिवार बसाये, पुरुष की अर्द्धांगिनी नहीं प्रतिद्वन्दी बन गई। सभी बन्धनों को उतारकर फैंक दिया। ***"आज मैं आजाद हूँ अपने ही चमन में"*** नारी सशक्तिकरण का युग प्रारम्भ हुआ। नारी की सुप्त प्रतिभाएँ जागृत हो उठी। वह चन्द्रलोक की सैर भी कर आयी। डॉक्टर बनीं, वकील बनीं, जज बनी, प्रधानमंत्री बनीं, विधायिका व मुख्यमंत्री बनीं, नहीं बनी तो ममतामयी माँ नहीं बनीं या कहें कि अपने को संभाले हुए अपनी ममता को ही खो बैठीं।

आज माँ होते हुए भी बच्चे बेसहारा हैं इनका बस चन्द घण्टों का मिलन होता है। आज कामकाजी महिलाओं की संख्या बढ़ती जा रही है। एक वर्ग ऐसा है जिसे क्लबों, किटी पार्टियों में जाने से फुर्सत ही नहीं। बच्चों का दु:ख दर्द बाँटने वाला कोई सहारा नहीं, एकाकी जीवन के कारण उनके जीवन में एक नीरसता तथा भटकाव आ गया है। माँ बाप को अक्सर तनाव या लड़ते–झगड़ते या फिर तकरार की स्थिति में देखता है क्योंकि विवाह एक समझौता बन गया है जिसके कारण बच्चों पर मनोवैज्ञानिक दृष्टि से दुष्प्रभाव पड़ रहा है। बाल मन जो कुछ समझ नहीं पाता, टी.वी. पर अपना अधिकांश समय बिताने लगा है। जिस कारण उसका रुझान सैक्स तथा हिंसा की ओर बढ़ रहा है। घण्टो फोन पर बैठा अपने **'He'** या **'She'** से बातें करता रहता है। आज माँ का स्थान आया ने, तो घर का स्थान सिनेमा घरों ने ले लिया है।

आज माँ के पास बच्चों के लिए स्वादिष्ट व्यंजन बनाने की फुरसत नहीं फास्ट फूड ही बच्चों के जीवन का आधार है जो उनके स्वास्थ्य के लिये हानिकारक तथा भयंकर रोगों को जन्म देता है।

आज मात्र उत्सवों में जाना, खाना खाना एवं तोहफे देने तक ही सीमित है रिश्तों की गरिमा। बच्चे जब माँ से शिकायत करते हैं या लाड़–दुलार करते हैं तो माँ जो अति–व्यस्तता तथा कार्य के बोझ से थक जाती है तो झल्ला कर कह देती है, तुम्हारी जरूरतों को पूरा करने के लिए ही तो मैंने दिन–रात एक कर रखा है, फिर भी तुम्हे संतोष नहीं। आज की नादान माँ समझ नहीं पाती संतान को सुख नहीं माँ की गोदी का आनन्द चाहिए, पैसा नहीं माँ के आँचल का सहारा चाहिए, सुरक्षा चाहिए, कोई अपना चाहिए। गृहस्थ का सहारा चाहिए, सुरक्षा चाहिए। गुहस्थ सुख से वंचित माँ न स्वयं संस्कारवान है न ही अपनी भावी संतति को सुसंस्कारों से सुसज्जित कर पा रही है। निराश माँ कभी गुरुओं के पास, कभी मंदिरों में तो कभी ज्योतिषियों के पास, कभी गृहशांति यज्ञ करवाकर शांति का वरदान माँगती है। किसी ने सही कहा है– "नारी को नारी ही रहने दो, उसे पुरुष मत बनाओ।"

एक अज्ञानी, अन्धाविश्वासी, अधार्मिक, असंस्कारी माँ अपने बच्चे का जीवन निर्माण कैसे करेगी? एक दीपक जो स्वयं बुझा हो वह दूसरों को प्रकाश क्या देगा? जो कुआं सूख गया हो वह दूसरों की प्यास क्या बुझाएगा?

पूर्व प्रधानमंत्री वाजपेयी जी ने सही लिखा है–''समानता के नाम पर जो नारी को पुरुष बनाने पर तुले हैं वे उपहास के पात्र हैं।'' नारी को नारी ही रहना है सिर्फ देखना यह है कि हाड़–मांस की बनी यह नारी न कठपुतली बनकर जिए, न उड़नपरी बनकर देश की धरती से नाता तोड़ लें।

आज बच्चों को दादा–दादी का प्यार, मामा–मामी, मौसा–मौसी, चाचा–चाची, बुआ आदि रिश्तों से तो सीमित हो ही चुका है कहीं ऐसा न हो कि माँ भी कहीं खो जाए। ममता, वात्सल्य जैसे भावों से वंचित हो जाए। प्राणी का शायद फिर जीने का अर्थ भी बदल जाये।

माँ के ममत्व का सृजन करो, यह फल फूलकर वटवृक्ष का रूप धारण करें। इसके आँचल की छाया में सबको विश्रान्ति मिले, त्राण मिटे सन्ताप मिटे, सुख–शांति का धाम मिले। **माँ के इस ममत्व भाव को मेरा शत्–शत् नमन्!!**

– अरुणा सतीजा,
तिलक नगर, जयपुर (राजस्थान)

अमर ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश

महर्षि दयानन्द सरस्वती के अमर ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश के सम्पूर्ण समुल्लासों की ऑडियो डीवीडी। सुमधुर एवं स्पष्ट आवाज में 35 घंटे की चलने वाली डीवीडी जो आपको तथा सुनने वाले समस्त लोगों को सत्यार्थ प्रकाश की शिक्षाओं को समझाने में सहायक होगी। मात्र 15 रुपये में। डाक से मंगाने हेतु डाकव्यय पृथक से देय होगा।

आर्यसमाज के यशस्वी संस्थापक महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के

125 वें निर्वाण वर्ष का समापन समारोह 30 नवम्बर, 2009 के अवसर पर

आर्यजनों का एक ऐतिहासिक आह्वान

जैसा कि आप जानते है कि गत वर्ष सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की ओर से महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के 125वें निर्वाण वर्ष आरम्भ होने के उपलक्ष्य में एक व्यापक कार्य योजना तैयार की गई थी, जिसे राज्य सरकारों तथा प्रान्तीय सभाओं की ओर से वर्ष भर संचालित करते हुए पूर्ण किया जाना था। इस कार्य योजना को दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा ने पूर्ण करने तथा दिल्ली में लागू करने के लिए एक समिति का गठन किया था। सभा ने माननीय मुख्यमन्त्री श्रीमती शीला दीक्षित जी से इस समिति के अध्यक्ष पद का उत्तरदायित्व संभालने का निवेदन किया था, जिसे उन्होंने सहर्ष स्वीकार किया। कार्य योजना के अन्तर्गत दिल्ली सहित अन्य अनेक राज्यों में अनेक प्रचार कार्य सम्पन्न किए गए जिससे कि जन–मानस तक महर्षि दयानन्द सरस्वती के चित्र एवं चरित्र को पहुंचाया जा सके।

दिनांक 14 नवम्बर, 2008 को इस अभियान का उद्घाटन समारोह– 'ज्ञान ज्योति पर्व' के रूप में नई दिल्ली के विज्ञान भवन में महामहिम राष्ट्रपति श्रीमती प्रतिभा पाटिल जी की गरिमामयी उपस्थिति में आप सबके सामने किया था। उस एक वर्षीय कार्य योजना में सभा ने कई महत्त्वपूर्ण कार्य किये जिनमें महर्षि दयानन्द के भव्य चित्र वाले होर्डिंग्स, पोस्टर व स्टीकर लगाना, विभिन्न विद्यालयों के बच्चों में विभिन्न प्रतियोगिताएं कराना, टी.वी. पर महर्षि के विज्ञापन देना, समाचार–पत्रों में–श्रद्धांञ्जलि विज्ञापन, प्रचार कार्यक्रम, विद्वत्त गोष्ठियाँ, बाल गोष्ठियां, एवं कॉमिक्स पुरस्कार योजना आदि मुख्य कार्य हैं। इसी क्रम में विभिन्न प्रान्तीय सभाओं के माध्यम से महा सम्मेलन आदि के आयोजन किए गए जैसे – जम्मू–कश्मीर, गुजरात, महाराष्ट्र, छत्तीसगढ़, बंगाल। प्रचार कार्यक्रमों के अन्तर्गत अनेक प्रचार यात्राएं निकाली गईं।

महाशय धर्मपाल जी ने अपना समर्पित सहयोग व कुशल मार्गदर्शन देकर एक ऐतिहासिक कार्य किया है। उन्हीं की प्रेरणा के अनुसार सभा ने 30 नवम्बर, 2009 को इस एक वर्षीय कार्यक्रम का समापन समारोह नई दिल्ली के सिरीफोर्ट ऑडिटोरियम में मनाने का निश्चय किया गया है। यह समापन समारोह भी वैसी ही गरिमा व भव्यता के साथ मनाया जाएगा। हमारे वर्ष भर के प्रचार अभियान में समय, श्रम व संसधान देने वाले कर्मठ आर्यो का सहयोग करने वाले आर्यसमाजों, प्रतिनिधि सभाओं, विद्यालयों व अन्य संस्थाओं को पुरस्कार दिया जाएगा। वर्ष भर में जो कार्य हुए है। उनका आंकलन करके भावी योजना पर विचार किया जाएगा। सभी ऋषि भक्त आर्यों के लिए यह समापन समारोह प्रेरणादायक व अविस्मरणीय रहेगा। सभी आर्यो से यह प्रार्थना है कि वे पूरे उत्साह व लगन के साथ इस समारोह में पधारें। महर्षि दयानन्द के महान् उपकारों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापन करने तथा जीवन में आर्यसमाज के कार्यों को निष्ठा व उत्साह पूर्वक करने की ऊर्जा व संकल्प शक्ति प्राप्त करने के लिए आप इस भव्य, ऐतिहासिक समारोह में सपरिवार व इष्टमित्रों सहित पधारें।

– विनय आर्य, महामन्त्री

छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्त्वावधान में

प्रान्तीय आर्य महासम्मेलन

4 , 5, 6 दिसम्बर, 2009

स्थान : घनश्याम सिंह आर्य कन्या महाविद्यालय, दुर्ग (छत्तीसगढ़)

विश्व कल्याण महायज्ञ विराट शोभायात्रा भजनोपदेश
आर्यवीर शक्ति प्रदर्शन वैदिक प्रवचन परिचर्चाएं
एवं विविध सम्मेलन

आर्यजन अभी से आयोजन की तिथियां नोट कर लें तथा अधिकाधिक संख्या में भाग लेकर संगठन शक्ति का परिचय दें तथा सम्मेलन को सफल बनाने में अपना योगदान देवें।

–: निवेदक :–

आचार्य दयासागर	दीनानाथ वर्मा	अरुण खोसला
प्रधान	मन्त्री	कार्यालय मन्त्री
9425944843	9826363578	9893787852

आर्यसमाजों, आर्य शिक्षण संस्थाओं, दैनिक हवन कर्ताओं के लिए खुशखबरी

MDH हवन सामग्री

अब सभा कार्यालय में भी उपलब्ध

अनेक जड़ीबूटियों व औषधियों से तैयार सुगन्धित हवन सामग्री अब दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा – 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली–1 में 5, 10 एवं 20 किलो के पैकेटों में उपलब्ध है। आर्यसमाजें अपनी आवश्यकतानुसार मंगाएं और विशुद्ध हवन सामग्री से यज्ञ करके वातावरण को सुगन्धि प्रदान करें।

5 किलो - 250 रुपये तथा 10 किलो - 490 रुपये

डाक/ट्रांसपोर्ट से मंगाने पर डाक व्यय अलग से देय होगा।

– संयोजक, विक्रय विभाग

आर्य संस्थाएं इतिहास लेखन हेतु जानकारियां भेजें

1. अपनी आर्यसमाज की स्थापना के सम्बन्ध में 10–15 पंक्तियां लिखें जिसमें उस समय के क्षेत्र की परिस्थितियां, किनके घर से आरम्भ हुआ, किन्होंने किया, आदि का भी उल्लेख हो।
2. आर्यसमाज की स्थापना की तिथि, संस्थापकों के नाम एवं परिचय सहित – यथासम्भव रिकार्ड के अनुसार हो तो बेहतर है।
3. आर्यसमाज के वर्तमान भवन के बृहद् तीन–चार चित्र अलग–अलग कोण से खींचकर भेजें जिसमें आर्यसमाज का नामपट्ट लिखा हिस्सा आ जाए, तो बेहतर है। (चित्र सीडी में भी भेजें)
4. आर्यसमाज द्वारा वर्तमान में संचालित समस्त गतिविधियों की जानकारी।
5. स्थापना से अब तक किए गए मुख्य कार्यों का विवरण।
6. वर्तमान के तीन पदाधिकारियों (प्रधान, मन्त्री एवं कोषाध्यक्ष) के नाम व फोटोग्राफ एवं महिला आर्यसमाज के भी उपरोक्त तीन पदाधिकारियों के फोटोग्राफ। (फोटो सीडी में भी भेजें) प्रत्येक फोटोग्राफ के पीछे उनका नाम अवश्य लिखा हो।
7. स्थापना काल से अब तक रहे अधिकारियों की सूची कार्यकाल सहित (यदि सम्भव हो तो)
8. वे कार्य जिनसे आपकी आर्यसमाज ने विशेषता प्राप्त की हों।
9. यदि कोई महान् व्यक्तित्व आपकी आर्यसमाज से सम्बन्धित रहे हों तो उनका विवरण परिचय अवश्य दें।
10. आर्यसमाज से सम्बन्धित कोई ऐसा ऐतिहासिक दस्तावेज जिसकी फोटोप्रति छापना इतिहास की दृष्टि से आप उत्तम समझें तो उसकी सॉफ्ट कॉपी करके अवश्य भेजें।

नोट : इन सबके अतिरिक्त अपनी आर्यसमाज के बारे में कुछ विशेष जानकारी/टिप्पणी देना चाहें तो उसे भी अलग से अवश्य ही दे देवें।

विशेष नोट : 1. इतिहास ग्रन्थ में प्रत्येक आर्यसमाज के विवरण के लिए दो पृष्ठ आरक्षित होंगे। जिसमें आधे पृष्ठ पर फोटो तथा शेष डेढ़ पृष्ठ पर आर्यसमाज का उपरोक्त वर्णन सम्पादित कर प्रकाशित किया जाएगा। 2. यदि समाज 50 वर्ष से अधिक पुराना है, वह चाहे तो अतिरिक्त शुल्क 750/– रुपये देकर तीसरा पृष्ठ भी ले सकते हैं। 3. ग्रन्थ का आकार 20×30×8 होगा। फोटो रंगीन प्रकाशित होंगे। इतिहास लेखन समिति ने प्रत्येक आर्यसमाज को 1000/– रुपये प्रति पृष्ठ की दर से शुल्क निर्धारित किया है। यह ग्रन्थ लगभग 700–800 पृष्ठों का होगा तथा दो भागों में प्रकाशित होगा। दोनों भागों का अनुमानित मूल्य 250/– रुपये होगा। यह ग्रन्थ आर्यसमाजों के इतिहास लेखन की दृष्टि से बहुत ही महत्वपूर्ण सिद्ध होगा। 4. इस ग्रन्थ में जानकारी भेजने वाली प्रत्येक आर्यसमाज/संस्था को ग्रन्थ की 5 प्रतियां निःशुल्क दी जाएंगी। 5. अपने पत्र एवं जानकारियां **'संयोजक, दिल्ली आर्यसमाज इतिहास लेखन समिति'** – 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली–1 के पते पर शीघ्रातिशीघ्र 31 दिसम्बर, 2009 से पूर्व भेज देवें।

– ब्र. राजसिंह आर्य, प्रधान *विनय आर्य, महामन्त्री* (9958174441)

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा कार्यालय में उपलब्ध
वैदिक साहित्य एवं प्रचार सामग्री

क्र.सं.	नाम वस्तु	मूल्य
1.	ओ३म् ध्वज (छोटा 1'×1.5')	10/–
2.	ओ३म् ध्वज (मध्यम 1.5'×2')	20/–
3.	ओ३म् ध्वज (बड़ा 2'×3')	50/–
4.	ओ३म् ध्वज (फैंसी – छोटा 1'×1.5')	50/–
5.	ओ३म् ध्वज (फैंसी – बड़ा 2'×3')	100/–
6.	दैनिक यज्ञ गुटका	400/– सैकड़ा
7.	घड़ी (सुपर)	300/–
8.	घड़ी (बड़ी)	100/–
9.	घड़ी (छोटी)	75/–
10.	लाइट आफ ट्रूथ (अंग्रेजी सत्यार्थ प्रकाश)	250/–
11.	सत्यार्थ प्रकाश	25/–
12.	सत्यार्थ प्रकाश (सजिल्द)	50/–
13.	श्रीमद्दयानन्द प्रकाश	125/–
14.	चांदी के सिक्के (10ग्रा.)	बाजार रेट पर
15.	सत्य की राह (वीसीडी)	25/–
16.	सत्यार्थ प्रकाश (डीवीडी)	15/–
17.	ऋषि गाथा (सीडी)	25/–
18.	गुरुदेव दयानन्द (सीडी)	20/–
19.	महर्षि दयानन्द फ्रेम्ड चित्र (बड़ा साइज)	5500/–
20.	महर्षि दयानन्द फ्रेम्ड चित्र (मध्यम)	2500/–
21.	महर्षि दयानन्द फ्रेम्ड चित्र (छाटा)	1000/–
22.	महर्षि दयानन्द फ्रेम्ड चित्र (10'' ×12'')	350/–
23.	महर्षि दयानन्द फ्रेम्ड चित्र (10'' ×12'')	250/–
24.	महर्षि दयानन्द के लेमिनेटिड चित्र (बड़ा)	125/–
25.	महर्षि दयानन्द के लेमिनेटिड चित्र (8''×10'')	40/–
26.	महर्षि दयानन्द के लेमिनेटिड चित्र (5''×7'')	20/–
27.	महर्षि दयानन्द के लेमिनेटिड चित्र (3''×5'')	15/–
28.	नेम स्लिप्स (18×1)	5/–
29.	शगुन लिफाफे	200/– सैकड़ा
30.	स्टीकर (125 निर्वाण वर्ष)	300/– सैकड़ा
31.	स्कूटर स्टेपनी कवर	10/–
32.	125वां निर्वाण वर्ष बैनर	10/–
33.	ओ३म् स्टीकर (छोटा)	150/– सैकड़ा
34.	ओ३म् स्टीकर (बड़ा)	5/–
35.	गायत्री मन्त्र स्टीकर	50/–
36.	वेद ईश्वरीय ज्ञान (लघु ट्रैक्ट)	250/– सैकड़ा
37.	आर्योद्देश्य रत्नमाला (लघु ट्रैक्ट)	250/– सैकड़ा
38.	यज्ञोपवीत	25/– सैकड़ा
39.	वेदों का सैट (14 खंडों में)	1500/–
40.	वेदों का सैट (अंग्रेजी :22 खंडों में)	2000/–
41.	वेदों का सैट (हिन्दी 4 खंडों में)	1500/–

आर्यजन अधिकाधिक संख्या में सभा कार्यालय स्थित के प्रचार स्टाल पर पधारें और उपलब्ध सेवाओं का लाभ उठाएं। *– विनय आर्य, महामन्त्री, 9958174441*

महर्षि दयानन्द बाजार (दाल बाजार) लुधियाना में
गुरु–शिष्य के 150वें वर्ष पर विशेष उत्सव सम्पन्न

आर्यसमाज दाल बाजार, लुधियाना में महर्षि दयानन्द जी और गुरु स्वामी विरजानन्द जी दण्डी स्वामी जी के प्रथम मिलन के 150वां वर्ष के उपलक्ष्य में जो मथुरा में मिले थे, दिवस मनाया गया। महर्षि दया नन्द जी ने इसी दिन स्वामी विरजानन्द जी को गुरु माना था। और इन्हीं से वेद आदि ग्रन्थों की शिक्षा लेकर दुनिया में सबसे पुराने धर्म, पुरानी संस्कृति का प्रचार किया था और विश्व में वैदिक धर्म के फैलाने के लिए आर्यसमाज की स्थापना की थी। आज दुनिया में महर्षि द्वारा स्थापित अनेकों संस्थाएं काम कर रही हैं। महर्षि ने दुनिया को सन्देश दिया कि वेदों की और लौटो।

– सन्त कुमार आर्य, प्रधान

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा
कार्य एवं गतिविधियों को जानने के लिए लॉगऑन करें
www.delhisabha.com

महर्षि दयानन्द सरस्वती
जीवन चरित्र, घटनाओं तथा ग्रन्थों की जानकारी के लिए लॉगऑन करें
www.swamidayanand.com

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन मथुरा में सम्पन्न अनूठी योजना में
नि:शुल्क आजीवन आर्यसन्देश सदस्यता विजेताओं के नाम

मथुरा में दिनांक 6, 7, 8 नवम्बर, 2009 को सम्पन्न हुए अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन के अवसर पर दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा की ओर से आर्यसन्देश साप्ताहिक के सदस्यों की संख्या में वृद्धि हेतु एक अनूठी का संचालन किया गया था। जिसके अन्तर्गत सम्मेलन स्थल स्थित सभा कार्यालय पर आने वाले प्रत्येक सज्जन को एक फार्म दिया गया था, जिसे भरकर वहीं स्टाल पर जमा कराना था। इस योजना के अन्तर्गत 4500 प्रविष्टियां प्राप्त हुई। ड्रा में विजयी महानुभावों के नामों की घोषणा दिनांक 8 नवम्बर, 09 को सम्मेलन स्थल पर ही सायं 3.30 बजे व्यवस्थापक श्री सुशील महाजन जी द्वारा की गई, जो निम्न प्रकार हैं :–

आजीवन सदस्यता विजेता

1. श्रुति आर्या, जयपुर
2. दीनानाथ, अलवर
3. राजनिवास, उत्तरकाशी
4. अरुणा शर्मा, दिल्ली
5. कुमार रंजन, समस्तीपुर
6. संजय नारंग, गुड़गांव
7. मनोज, मथुरा
8. रामनाथ आर्य, फरीदाबाद
9. नरेश पाल आर्य, लखनऊ
10. श्यामलाल आर्य, इन्दौर

द्विवार्षिक सदस्यता विजेता

1. सर्वश्री कपिल, जूनागढ़
2. रोहताश सिंह, इन्दौर
3. राजेश चन्द्र शर्मा, मथुरा
4. हिमांशु शर्मा, जालन्धर
5. जगत शर्मा, नरायणगढ़
6. ब्रह्मपाल सिंह रावत, दिल्ली
7. रामबाबू आर्य, अमरोहा
8. आदित्य आर्य, शाहजहांपुर
9. श्रीमती कांती आर्या, लखीमपुर
10. कु. निकिता आर्या, मुरादाबाद
11. दिनेश चन्द्र शर्मा, गोंडा
12. रत्नसिंह ढाका, जैसलमेर
13. महेन्द्र सिंह, अजमेर
14. पं. ओम सुमरण, उज्जैन
15. शान्ति प्रसाद सिंह, इलाहाबाद
16. रोहित विश्वास, कोलकाता
17. अमरीश प्रकाश, लुधियाना
18. मनमोहन सिंह, गढ़वाल
19. श्रीप्रकाश आर्य, महाराष्ट्र
20. वेदव्रत आर्य, गोरखपुर

वार्षिक सदस्यता विजेता

1. श्रीकृष्ण आर्य, शाहजहांपुर
2. जयवीर आर्य, भटिंडा
3. मीणा अग्रवाल, कोटद्वार
4. बलबीर सिंह आर्य, सोनीपत
5. प्रताप शर्मा, भीण्ड
6. माया सिंह, मिर्जापुर
7. ज्वलन्त कुमार, आगरा
8. ज्ञान चंद, रांची
9. शकुन्तला देवी, उ.प्र.
10. अनुराग, शाजापुर
11. संदीप गुप्ता, दिल्ली
12. राजेश कुमार, दिल्ली
13. कालीचरण आर्य, उ.प्र.
14. दर्शन चौधरी, बुलन्दशहर
15. अरुणेश आर्य, हिसार
16. मंजीत आर्य, पानीपत
17. राजनारायण आर्य, गोरखपुर
18. संजीव मंगला, पलवल
19. रामसिंह, दिल्ली
20. विकास शर्मा, जबलपुर
21. विजय शर्मा, दिल्ली
22. रमेशचन्द्र गुप्ता, बहराइच
23. भगवान सिंह, शामली
24. अमर सिंह आर्य, मण्डी
25. तेज नारायण शर्मा, अमृतसर
26. वरुण कुमार, अलीगढ़
27. रामपाल सिंह, उत्तराखण्ड
28. केदारनाथ आर्य, प्रतापगढ़
29. मुकेश चन्द्र शर्मा, मथुरा
30. पूरणमल चौधरी, गुड़गांव
31. ज्योतिष आर्य, अजमेर
32. आशा नागर, अमरोहा
33. ज्योति प्रसाद, पटना
34. सुशील बुटेला, गोरखपुर
35. हरिनाथ आर्य, जयपुर
36. महावीर, शिमला
37. जय कुमार आर्य, पीलीभीम
38. पंकज आर्य, रूप नगर
39. विनय शर्मा, जबलपुर
40. राजकुमार, इन्दौर
41. रजनीश वर्मा, दिल्ली
42. वीरेन्द्र कुमार, हाथरस
43. गजानन्द आर्य, ज्वालापुर
44. हरिनाथ साहू, समस्तीपुर
45. जयकिशन, गाजियाबाद
46. अम्बर नाथ, जोधपुर
47. विवेक, हिसार
48. मुकेश, दिल्ली
49. अमर, सोनीपत
50. लोकेश, दिल्ली।

समस्त विजेताओं को हार्दिक बधाई। आप सभी को आर्यसन्देश साप्ताहिक नि:शुल्क भेजना आरम्भ कर दिया गया है।

– सम्पादक

निर्वाचन समाचार

आर्यसमाज लक्ष्मी नगर, दिल्ली–92

प्रधान : श्रीमती डॉ. सुशीला लाल
मन्त्री : श्री मनुदेव
कोषाध्यक्ष : श्री ओमप्रकाश मलिक

गढ़वाल आर्य उप प्रतिनिधि सभा, पौड़ी गढ़वाल (उत्तराखण्ड)

प्रधान : श्री सुरेन्द्र लाल आर्य
मन्त्री : श्री वसुदेव विमल
कोषाध्यक्ष : पं. सुखेदव शस्त्री

आर्यसमाज हनुमान रोड, नई दिल्ली का

87वां वार्षिकोत्सव

समापन समारोह एवं विशेष प्रवचन

रविवार 22 नवम्बर, 2009

समयः प्रातः 9.00 बजे से

प्रवक्ता : डॉ. महेश विद्यालंकार, डॉ. सुषमा शर्मा एवं आचार्य हरि प्रसाद जी

विषयः देशोद्धारक महर्षि दयानन्द नारी शिक्षा और महर्षि दयानन्द वेदों में धर्म का स्वरूप

सभी आर्यजन सपरिवार वेदामृत पानकर जीवन सफल बनाएं।

– अरुण प्रकाश वर्मा, प्रधान
नरेन्द्र सिंह हुड्डा, मन्त्री

आर्यसमाज कायमगंज, फर्रुखाबाद का

131वां वार्षिकोत्सव

26 से 29 नवम्बर, 2009

यज्ञ : प्रातः8 से 11 बजे

भजन–उपदेशः प्रतिसायं 7 से 10 बजे

सभी आर्यजन सपरिवार वेदामृत पानकर जीवन सफल बनाएं।

– रामानन्द आर्य, प्रधान
केशवचन्द्र आर्य, मन्त्री

आर्यसमाज बड़ा बाजार, सोनीपत का

93वां वार्षिकोत्सव सम्पन्न

आर्यसमाज 'शहर' बड़ा बाजार सोनीपत का 93वाँ वार्षिकोत्सव 26 अक्टूबर से 1 नवम्बर तक आध्यात्मिक सत्संग के रूप में स्थानीय आर्यसमाज परिसर और एकता पार्क 8 मरला में बड़ी धूमधाम और हर्षोल्लास से सम्पन्न हुआ।

पं. नरदेव आर्य (भरतपुर) ने अपनी ओजस्वी वाणी और जनमानस में, ब्रह्मयज्ञ अर्थात् संध्या मानव निर्माण में संस्कारों की आवश्यकता आदि विषयों की सुस्पष्ट व्याख्या के माध्यम से, रुचि एवं जिज्ञासा जागृत करने का सत्प्रयास किया। *– सुदर्शन आर्य, मंत्री*

महर्षि दयानन्द सरस्वती का 126वां निर्वाणोत्सव सम्पन्न

गिरधारी लाल आर्य महर्षि दयानन्द संस्थान के तत्त्वावधान में महर्षि दयानन्द सरस्वती का 126 वां महापरिनिर्वाण दिवस धूमधान से व्यापार मण्डल के सभागार में मनया गया। इस अवसर पर 'समाजसेवा व समतामूलक समाज' के क्षेत्र में उल्लेखनीय कार्यों हेतु डॉ. मंगलदेव ध्यानी सलाहकार जड़ी–बूटी शोध संस्थान उत्तराखण्ड एवं समाजसेवी श्री सत्य प्रकाश क्षेत्रपाल को माल्यार्पण, अंग वस्त्र, स्मृति चिह्न भेंट व सम्मान पत्र भेंटकर, संस्थान के अध्यक्ष सुरेन्द्र लाल आर्य व पूर्व मन्त्री, मुख्य अतिथि श्री सुरेन्द्र नेगी द्वारा सम्मानित किया गया।

महर्षि दयानन्द को विश्व के महान समाज सुधारक बताते हुए उनके सपनों के भारत बनाने के लिए आगे आने की जरुरत बताई गई।

आर्यसमाज राजौरी गार्डन, नई दिल्ली के

55वें वार्षिकोत्सव पर अथर्ववेदीय यज्ञ एवं वेद प्रवचन

पूर्णाहुति एवं समापन समारोह

22 नवम्बर, 2009

समय : प्रातः 6.30 से 1 बजे तक

सभी आर्यजन अधिकाधिक संख्या में पधारकर कार्यक्रम को सफल बनाएं।

– जगदीश आर्य, प्रधान
ओम प्रकाश अरोड़ा, मन्त्री

वानप्रस्थ साधक आश्रम रोजड में

धर्मार्थ दवाखाना का शुभारम्भ

दिनांक 26/11/2009 को वानप्रस्थ साधक आश्रम आर्यवन रोजड के प्रवेश द्वारा के पास एक धर्मार्थ दवाखाना का गुजरात प्रांतीय आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री सुरेशचन्द्र जी अग्रवाल के कर कमलों से दीप प्रगट्य कर शुभारम्भ किया गया। इस अवसर पर स्वामी विवेकानन्द परिव्राजक, आर्यवन विकास फार्म ट्रस्ट के संस्थान प्रधान श्री धनजी वेलाणी, डॉ. रमेश आर्य, वानप्रस्थ साधन आश्रम के ट्रस्टीगण तथा अहमदाबाद से पधारे।

– ब्र. दिनेश कुमार

फौलादी संकल्प से सुलझेंगी समस्याएं

सरदार वल्लभभाई पटेल की 134वीं जन्म जयंती पर देशवासियों ने उनका कृतज्ञ स्मरण किया। दिल्ली के 'देशराज परिसर' में आयोजित समारोह में वक्ताओं ने कहा कि परिदृश्य में उभर रही चुनौतियों से निपटने के लिए सरदार पटेल जैसे फौलादी संकल्प की जरूरत है। मंच पर पृष्ठभूमि में लग लौहपुरुष का पूर्णाकार चित्र कुछ संदेश देता प्रतीत हुआ, जिसे देश भर से आए प्रख्यात कवियों ने अपनी नवीन रचनाओं से वाणी दी।

नागरिक परिषद दिल्ली, सरदार वल्लभभाई पटेल स्मारक ट्रस्ट, चन्द्रवती चौधरी स्मारक ट्रस्ट और आश्रय के संयुक्त तत्त्वावधान में आयोजित यह समारोह मध्यरात्रि तक चला।

राज्यसभा में प्रतिपक्ष के नेता अरुण जेतली ने अपने संदेश में कहा कि सरकार का कृतित्व कीर्ति का मोहताज नहीं। राष्ट्रीय एकजुटता को निरन्तर मजबूती देना उनके प्रति उपयुक्त श्रद्धांजलि होगी। हमारे एक अरब से अधिक देशवासी आन्तरिक एकजुटता बनाए रखें तो हम सीमा पर से प्रस्तुत हर चुनौती से आसानी से निपट लेंगे, इसमें जरा भी संशय नहीं।

उन्होंने कहा कि खून का एक कतरा बहाए बगैर सारे देश को एक संगठित सत्ता का आकार देने में लौहपुरुष ने जो ऐतिहासिक भूमिका निभाई थी, वह दुनिया के इस विशालतम लोकतन्त्र का प्रधान सम्बल है।

– सुरेन्द्र मोहन, संयोजक

आर्यसमाज प्रशान्त विहार, दिल्ली का

25वां वार्षिकोत्सव एवं अथर्ववेद पारायण यज्ञ

23 से 29 नवम्बर, 2009

यज्ञ : प्रतिदिन प्रातः 7 से 9 बजे

ब्रह्मा : आचार्य इन्द्रदेव जी

भजन : पं. भानु प्रकाश जी

भजन–प्रवचनःसायं 7.30–9.30 बजे

आर्य महिला सम्मेलन : 27 नवम्बर

बच्चों के कार्यक्रम : 28 नवम्बर, 09

समापन समारोह : 29 नवम्बर, 09

सार्वजनिक सभा : प्रातः 10 से 1 बजे

अध्यक्षता : श्री भजन प्रकाश आर्य

सभी आर्यजन सपरिवार वेदामृत पानकर जीवन सफल बनाएं।

– दुर्गा प्रसाद कालड़ा, प्रधान
ओमप्रकाश भावल, मन्त्री

हवन महोत्सव सम्पन्न

यज्ञ समिति झज्जर द्वारा प्रायोजित 64 हवनकुण्डों में 64 परिवारों के साथ–साथ अनेकों परिवारों के सैकड़ों सदस्यों से श्रद्धापूर्वक आहुतियाँ प्रदान की। स्थान मल्हाण क्रिकेट अकादमी पार्क सिलानी गेट, झज्जर में लगभग एक–दो हजार बाल–युवा–वृद्धों ने प्रातः 7 बजे विधिवत देवयज्ञ (हवन) प्रारम्भ किया।

– सूबेदार भरत सिंह, प्रधान

रोजड़ में क्रियात्मक योग प्रशिक्षण शिविर सम्पन्न

स्वामी सत्यपति जी परिव्राजक की अध्यक्षता में वानप्रस्थ साधक आश्रम, आर्यवन, रोजड़ में कार्तिक शुल्क द्वितीया, वि. सं. 2066 तदनुसार 20 अक्टूबर से 26 अक्टूबर 2009 तक 8 दिवसीय योग प्रशिक्षण शिविर का आयोजन हुआ। जिसमें देश के 10–12 प्रान्तों से पधारे लगभग 300 (पुरुष–महिला) शिविरार्थियों ने भाग लिया।

शिविर में आचार्य श्री ज्ञानेश्वर जी, स्वामी विवेकानन्द परिव्राजक, ब्र. प्रशान्त जी दर्शनाचार्य, ब्र.दिनेश कुमार, ब्र. अरुण कुमार आर्यवीर, ब्र. ईश्वरानन्द जी, श्री चन्देश जी आर्य आदि विद्वानों ने अनेक विषयों से सम्बन्धित कक्षाएं लीं।

समाचार संशोधन

खेद है कि साप्ताहिक आर्यसन्देश गतांक 9 से 15 नवम्बर में पृष्ठ 5 पर प्रकाशित 'पुण्य स्मरण–माता सरला आर्या' लेख में भूल वश 'कुछ वर्षों से कैंसर ग्रस्त' प्रकाशित हो गया था। कृपया इसे सुधारकर 'कुछ समय से' पढ़ा जाए। माताजी के रोग ग्रस्त होने की जानकारी इसी जून माह में ही मिली थी। पाठकों को होने वाली असुविधा के लिए सम्पादक मंडल खेद व्यक्त करता है। *– सम्पादक*

आर्यसमाज बिड़ला लाइन्स का

80वाँ वार्षिकोत्सव

27 से 29 नवम्बर, 2009 तक

चतुर्वेद शतकम् यज्ञ : प्रातः 7–9.30 बजे

ब्रह्मा : आचार्य रामदत्त जी

यज्ञ संयोजक : आचार्य कुंवरपाल शास्त्री

वेदपाठीः आर्ष गुरुकुल एटा के ब्रह्मचारी

भजन–प्रवचन : सायं 7 से 9 बजे

आर्य महिला सम्मेलन : 28 नवम्बर

पूर्णाहुति समापन समारोह : 29 नवम्बर

समय : प्रातः9.30 से 1.30 बजे

सभी आर्यजन सपरिवार वेदामृत पानकर जीवन सफल बनाएं।

– योगेश कुमार आर्य, प्रधान
नरेन्द्र आर्य, मन्त्री

'चरैवेति पथ पर' का लोकार्पण

गाँधी जयंती के अवसर पर भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद के सभागार में भारतीय सामाजिक विज्ञान अनुसंधान परिषद् (भारत सरकार) के सहयोग से रिसर्च फाउण्डेशन द्वारा महात्मा गाँधी जी की सुपौत्री श्रीमती तारा गाँधी के संदेश पर परिचर्चा के अतिरिक्त मॉरिशस के राजदूर मुखेश्वर चुनीं व भारत के पूर्व प्रधान चुनाव आयुक्त डॉ. जी.वी.जी. कृष्णमूर्ति द्वारा 'चरैवेति पथ पर डॉ. श्याम सिंह शशि की पुस्तक का लोकार्पण किया गया। चित्रकला संगम द्वारा प्रकाशित इस पुस्तक के संपादक पद्मश्री वीरेन्द्र प्रभाकर ने बताया कि उन्होंने डॉ. शशि से कई बार अनुरोध करने पर चित्र प्राप्त किए अनेक रंगीन चित्रों की यह ऐतिहासिक चित्रावली तैयार की। पुस्तक में साहित्य अकादमी की हिन्दी–अंग्रेजी पत्रिकाओं से उद्धृत डॉ. शशि के प्रबंध काव्य 'अग्निसागर' वय/कविताओं की समीक्षाएं तथा अन्य ग्रंथों के गद्यांश शामिल हैं।

डॉ. हीरालाल बाछौतिया का कहना था कि चित्रावली की बोलती तस्वीरों में जहाँ श्रीमती इन्दिरा गाँधी, आर. वेंकट रमन, डॉ. शंकर दयाल शर्मा, ज्ञानी जैल सिंह, डॉ. एपीजे अब्दुल कलाम आदि राजनेताओं द्वारा डॉ. शशि को सम्मानित करते हुए चित्र हैं वहीं इस चित्रावली में स्व0 वन्देमारतम्, स्वामी आनन्दबोध सरस्वती आदि आर्य नेताओं के चित्र भी है जिन्होंने डॉ. शशि को सम्मानित किया है। **– डॉ. जे. के. शर्मा, मीडिया प्रभारी**

महर्षि दयानन्द सरस्वती निर्वाणोत्सव सम्पन्न

महर्षि दयानन्द बाजार (दाल बाजार) लुधियाना में 18 अक्टूबर, 09 को महर्षि दयानन्द जी का 125वां निर्वाणोत्सव मनाया गया।

इस अवसर पर भजन संध्या का कार्यक्रम किया गया। अजय कुमार जी बत्रा एव श्रीमती ज्योति बत्रा ने दीप प्रज्ज्वलित कर कार्यक्रम का शुभारम्भ किया। श्री आत्म प्रकाश जी एवं श्रीमती लाज वर्मा भी उपस्थित थे।

– सन्त कुमार आर्य, प्रधान

❖ साप्ताहिक आर्य सन्देश ❖

16 नवम्बर, 2009 से 22 नवम्बर, 2009

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, १५-हनुमान् रोड, नई दिल्ली-११०००१

दिल्ली पोस्टल रजि.नं० डी.एल.(एन.डी.)-११/६०७१/२००९-२०११
नई दिल्ली पी.एस.ओ. में पोस्ट करने की दिनांक १९/२०-११-२००९
पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं० यू०(सी०) १३९/२००९-११
आर. एन. नं. ३२३८७/७७

महर्षि दयानन्द सरस्वती के 125वें निर्वाण वर्ष पर

आर्यसमाज के प्रचार–प्रसार के लिए, युवाओं को साथ जोड़ने के लिए, देश और समाज में पुनः वैदिक मान्यताओं के प्रचार के लिए, देश–भक्त और महर्षि मिशन के सिपाही तैयार करने के लिए, भारतीय जनमानस को पुनः झकझोरने के लिए विशेष रूप से तैयार की गई फिल्म :–

"सत्य की राह" वीसीडी
केवल 25/– रुपये में

अपने बच्चों को अवश्य दिखाएं, भेंट तथा उपहार में देवें। आओ हम सब मिलकर महर्षि के सपनों का भारत बनाने में सहयोग करें। आओ हम सब देशभक्त बनकर पुनः विश्वगुरु भारत का सृजन करें।

प्रतिष्ठा में,
श्री.........................

सामाजिक, धार्मिक व समसामयिक गतिविधियों का दर्पण

साप्ताहिक आर्य सन्देश

आप तक पहुंचाता है, देश-विदेश सहित दिल्ली एवं आसपास की आर्य संस्थाओं की समस्त जानकारियां।

आज ही सदस्यता प्राप्त करें

वार्षिक सदस्यता : 150/– आजीवन सदस्यता 750/–

नेमस्लिप्स

विद्यालयों में पढ़ने वाले बच्चों को महर्षि दयानन्द जी के बारे में जानकारी देने तथा उन्हें आर्यसमाज की ओर आकर्षित करने की छोटी सी शुरुआत : कापी–किताबों पर चिपकाने के लिए नेमस्लिप्स। 18 स्लिप्स का एक सैट मात्र 5/– रुपये प्रति शीट।

शगुन लिफाफे

महर्षि दयानन्द के चित्र एवं वेदमन्त्रों सहित
छह सुन्दर डिजाइनों में
केवल मात्र 200/– रुपये सैंकड़ा

आर्यजन अधिक से अधिक संख्या में मंगाकर आर्यसमाज एवं वैदिक धर्म के प्रचार प्रसार में सहयोगी बनें। आज ही अपने आर्डर भेजें।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा की संगीतमय प्रस्तुति
"गुरुदेव दयानन्द"
ऑडियो सीडी

सुन्दर मधुर भजनों का मनभावन संकलन
केवल 20/– रुपये में

पैकिंग एवं डाक व्यय पृथक से देय होगा।

–: प्राप्ति स्थान :–
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा
15, हनुमान रोड, नई दिल्ली–1
दूरभाष : 23360150, 23365959

सम्पादक, मुद्रक एवं प्रकाशक ब्र० राजसिंह आर्य ने दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए सार्वदेशिक प्रेस, 1488 पटौदी हाऊस, दरियागंज, नई दिल्ली-2 से छपवाकर दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, १५-हनुमान रोड नई दिल्ली-१; फोन : २३३६०१५०; टैलीफैक्स २३३६५९५९; E-mail : aryasabha@yahoo.com से प्रकाशित किया।

सम्पादक : ब्र० राजसिंह आर्य सह सम्पादक : विनय आर्य व्यवस्थापक : सुशील महाजन सह व्यवस्थापक : आर्य डॉ० ओमप्रकाश भटनागर